करबला का शहीद

बाबू वीरेन्द्र कुमार ''वीरू'' जी

आदि काल से ही इस संसार में दो विरोधी शक्तियों का संघर्ष होता रहता है। एक ओर सत्य और सदगुणों के पक्षधर, साधु-सन्त, दैवी-प्रकृति के महामानव सिद्धांतों के लिये संघर्षरत रहे तो दूसरी ओर असत्य के प्रेमी, अपने दुर्गुणों का पशुबल द्वारा सिक्का जमाने वाले, सिद्धांतविहिन, दानव प्रकृति के दृष्ट ओर धूर्त व्यक्ति रहे। यदि एक ओर राम, कृष्ण, गौतम, ईसा, मोहम्मद, हुसैन, गांधी आदि सत्य और सिद्धांत के पक्षधर थे तो दूसरी ओर रावण, कंस, यज़ीद, इब्ने ज़ियाद आदि असत्य, क्रूरता। पशुबल और अह्म के पक्षघर थे। यह संघर्ष सृष्टि के आदि से चलता रहा है और अन्त तक चलता रहेगा।

आज से 14 सौ वर्ष पूर्व अरब में शाम का शासक यज़ीद पशुबल के द्वारा बादशाह बन बैठा। वह अन्याय और अत्याचार का प्रतीक था अहंकारी और आडम्बरी था, **जो अपने लिये सच्चा इस्लामी प्रशासक होने का दअ़्वा तो करता था परन्तु जिसका आचरण उसके दअ़्वे के सर्वथा विपरीत था।**

पैग़म्बर मोहम्मद (स०) को गुज़रे अभी अधिक समय नहीं बीता था मात्र 50 साल ही हुए थे परन्तु यज़ीद, मोहम्मद (स०) के दिखाए हुए मार्ग से हट कर चल रहा था। फिर भी तमाम लोग न चाहते हुए भी भय और दबाव वश सच्चे मुसलमान बादशाह होने के यज़ीद के दअ़्वे को माने चुके थे ''बैअ़त'' कर ली थी। परन्तु पैग़म्बर साहब के घराने से अभी तक वह बैअ़त नहीं ले सका था। यह अभाव यज़ीद को खटकता था। अतएव वह **किसी भी प्रकार उनसे ''बैअ़त'' लेने के लिए प्रयासरत था।**

इमाम हुसैन (अ०) शांतिपूर्वक अपने मार्ग पर चल रहे थे। वह यज़ीद के कार्यों में हस्तक्षेप भी नहीं कर रहे थे, परन्तु उन्होंने यज़ीद से ''बैअ़त'' करने से इंकार कर दिया। उसे इस्लामी शासक की मान्यता देना अस्वीकार किया। यज़ीद ''बैअ़त'' लेने के लिए कटिबद्ध था और उसकी यह कटिबद्धता ही संघर्ष का कारण बनी। यज़ीद ने विरोध सहन करना सीखा ही न था उसने सीखा था विरोध का दमन और पूर्ण दमन। उसने अपनी दानवी शक्ति का शिकंजा इमाम हुसैन के (अ०) विरूद्ध कसना शुरू कर दिया।

आ़म जनता बहुत डरी हुई थी, दबी हुई थी। चाहते हुए भी, उसमें न यज़ीद के प्रति विद्रोह करने का साहस था और न आत्मबल। परिस्थितियाँ कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों, पैग़म्बर (स०) के निवासे और आध्यात्मिक उत्तराधिकारी हज़रत अली (अ०) के लाडले इमाम हुसैन (अ०) दबने वाले न थे, झुकने वाले नहीं थे। उन्हें एहसास था कि उनकी नसों में पैग़म्बर (स०) का और हज़रत अली (अ०) का खून प्रवाहित हो रहा है वह सजग थे कि पैग़म्बर (स०) द्वारा जलाई जाने वाली इस्लाम की मशाल को किसी भी मूल्य पर बुझने नहीं देना हैं वह भली भांति समझते थे कि इस मशाल को प्रज्वलित रखने की उनकी अपनी ज़िम्मेदारी है, भले ही मशाल के लिए उनके लिए उनके अपने लहू को स्नेह बनकर जलना पड़े।

तनाव बढ़ता गया, शिकंजा और कसता गया । इमाम हुसैन (अ०) ने स्पष्ट देखा कि संघर्ष और बलिदान के सिवा अन्य कोई मार्ग नहीं है। फिर भी संघर्ष टालने के लिये, व्यर्थ के ख़ून खराबे को बचाने के लिये, उन्होंने यज़ीदी लश्कर के सेनापति से कई बर सम्पर्क साधां

सेनापति ने हुसैन (अ०) को यज़ीद का संदेश सुनाया कि हुसैन (अ०) यज़ीद की बैअ़त कर उसे इस्लामी शासक की मान्यता दें, उसके कामों में किसी प्रकार का भी दख़ल न दें, जनता की चीख़-पुकार को न सुनें, जो अपराध हो रहे हैं उन्हें होने दें तभी उनकी और उनके साथियों की जान बच सकती हैं हुसैन (अ०) को अपनी जान बचाने के लिये यह सब स्वीकार न था। उन्होंने उससे आख़िरी बात कही,''अच्छा मुझे हिन्दोस्तान जाने का रास्ता दे दो।''

''विरोध में उसके डटे रहे, राह मांगी हिन्दुस्तान की''

परन्तु यज़ीदी पक्ष ने इसको भी न माना। संभवतः उन्हें शंका रही होगी कि हुसैन (अ०) भारत की सहायता

लेके तलवार का जवाब तलवार से देने की स्थिति में न आ जायें। क्योंकि कुछ ऐतिहासिक संदर्भों में इसकी चर्चा आई है कि हिन्दुस्तान के शूरवीर **''दत्त''** ब्रह्ममणों से हुसैन (अ०) के मधुर और घनिष्ट सम्बन्ध थे। मैं इस समय इस स्थिति में नहीं हूं कि इस कथन की प्रामाणिकता पर बल दे सकूँ लेकिन यदि ऐसा रहा भी हो तो बुद्धि और मानवता के दुश्मन यज़ीद को यह सोचना चाहिए था कि जब हुसैन (अ०) ने खुद अरब में युद्धबल नहीं बटोरा, स्वंय अपने परिवार के बस शूरवीरों को साथ नहीं ले गये। अपने अहले हरम और छोटे-छोटे बच्चों तक को साथ रखा तो वह भारत की साहयता से सैनिक संघर्ष में क्यों पड़ते।

फिर अस्ल चीज़ देखने की तो यह है कि इमाम हुसैन (अ०) यज़ीद की राह में खुद से आए कहाँ? उस ने तो अपने पिता की मृत्योपरान्त बैअ़त लेने या सिर देने के मात्र दो विकल्पों में घेर के इमाम हुसैन (अ०) को अपनी आत्मा रक्षा में तलवार का सहारा लेने पर विवष कर दिया वह अंतिम समय तक टकराव टालने के सद्यत्न में रहे। उन्होंने समझौते के लिए यज़ीद से प्रत्यक्ष चर्चा करनी चाही। यज़ीद के अधिकाारियों ने आपकों इसकी छूट नहीं दी और ऐसी सेना द्वारा जिसकी गिनती तीस हज़ार से लेकर लाखों तक बतायी जाती है आपके छोटे-मोटे काफ़िले को घेर लिया, ऐसा क़ाफ़िला जिसमें सौ से कम या ज़ियादा लोग थे। उसके फ़ोज़ियों ने इतना ही नहीं कि हुसैन (अ०) का पड़ाव ''फ़ुरात'' के किनारे पड़ने न दिया बल्कि जहाँ इमाम (अ०) के ख़ैमे खड़े किये गए उस स्थान और ''फ़ुरात'' के बीच सेना की दीवार खड़ी कर दी और पानी लाने की राह पूर्णतया अवरूद्ध कर दी। मौसम का हाल यह था कि,,,,,,

''धरती तपती थी तप्त तवे सी,
नभ से आग बरसती थी।
लपट से लगते हवा के झोंके,
सारी देह झूलसती थी।।
नदी पे पहरा बैठा था,
पानी भरने पर सख़्ती थी।
आबाल वृद्ध सब प्यासे थे,
जल को जीभ तरसती थी''।।

करबला की मरूभूमि और जल भरने पर पाबन्दी। सहन शक्ति की यह कठिन परीक्षा थी। हुसैन (अ०) और उनके 72 साथियों की जो हुसैन (अ०) के साथ शहीद हुए। जो हुसैन (अ०) के बार-बार कहने पर भी उनका साथ छोड़ कर नहीं गये। डटे रहे, हुसैन (अ०) के साथ जीने के लिये, हुसैन (अ०) के साथ ही मरने के लिए। इतना ही नहीं हुसैन (अ०) के सच्चे रास्ते से प्रभावित होकर यज़ीद की सेना से **वह अधिकारी जो इमाम हुसैन (अ०) को घेर कर करबला लाया था, हुसैन (अ०) की ओर आ गया और उनके चरणों पर अपने प्राण न्योछावर किये।** जहाँ पर न ऐश था, न आराम। जहां पर भूख तो थी पर भोजन नहीं, प्यास तो थी मगर पानी नहीं, जहाँ मौत थी और निश्चित मौत थी। परन्तु जहाँ पर जीवन का सत्य था, धर्म था, दया थी, करूणा थी और था मोहम्मद (स०) की जलाई हुई मशाल का प्रकाश था।

नदी से पानी लाने का युद्धवीर अ़ब्बास (अ०) का साहसी अभियान भी असफ़ल हुआ। 6 माह के मअ़सूम शिशू **''अ़ली असग़र''** (अ०) की प्यास दुश्मनों ने तीर से बुझाई।

हुसैन (अ०) का एक-एक साथी बहादूरी से लड़ता हुआ शहीद हुआ। हुसैन (अ०) भी वीरता से लड़ते हुए शहीद हो गए। उनके पवित्र लहू से वहाँ की मिट्टी पवित्र हो गई। आज भी करबला का कण-कण उनकी अदम्य शौर्य गाथा का बखान कर रहा है। उनकी शहादत की साझी दे रहा।

''लहू से जिनके पावन हो गई, मिट्टी उस स्थान की''
कर्बला का कण-कण कहता, पवित्र बलिदान की कहानी है।
गूंज रही है नभ में अब तक, अमर हुसैन की वाणी।।

करबला की दुखद घटना और हुसैन (अ०) का बलिदान केवल अरब वालों के लिए ही प्रेरणा का स्त्रोत नहीं वरन् वह समस्त संसार को अन्याय के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। **बलिदानी किसी भी सम्प्रदाय में जन्मा हो, किसी भी देश का नागरिक क्यों न हो परन्तु ऐसा व्यक्ति सम्प्रदाय, देश और राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर बहुत ऊपर उठ जाता है।** बलिदान की वेदी को स्पर्श कर वह सभी का बन जाता है। सभी को अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करने को प्रेरित करता है। उसका स्मारक एक पुनित प्रकाश स्तम्भ बन कर मार्ग से भटकने वाले हर राही को सही

(बकिया पेज नं0 48 पर ....)

शिया व सुन्नी वक़्फ़ बोर्ड की सी0बी0आई0 जांच कराये सरकार

क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी

11 सितम्बर को मजलिसे उलमाए हिन्द के जनरल सिक्रेट्री इमामे जुमा क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी ने अपने जारी बयान में कहा कि ज़ालिम, ज़ालिम का मददग़ार और उसका कार्य सराहने वाले सब एक ही दायरे में आते हैं। ये जुल्म की इन्तेहा है कि हमारे नौजवानों को फर्जी मुक़द्दमों में गिरफ़्तार कर के अब उन पर गैंगेस्टर लगा दिया गया है, और हमारी क़ौम की महिलाओं को गिरफ़्तार करने की साज़िश की जा रही है। मौलाना ने कहा कि समाजवादी सरकार में शियों के साथ ऐसा ज़ालिमाना बर्ताव किया जा रहा है जैसा बर्ताव इससे पहले किसी सरकार में नहीं किया गया। दर असल पिछले पार्लिमेन्ट ऐलकशन में मिली करारी हार से मुलायम सिंह से सरकार बौख़ला गयी है इस लिये कभी शियों पर जुल्म किया जा रहा है और कभी हिन्दू और मुसलमानों की हक़ तलफ़ी की जा रही है। इस बार न उन्हें हिन्दुओं का वोट मिलेगा और न मुसलमान उनका समर्थन करेंगे। मौलाना ने कहा कि जनता बेवक़ूफ़ नहीं होती वो सब जानती है। समाजवादी सरकार की दोहरी पालिसीयों का जवाब वह ऐलकशन में देगी। जनता हर जुल्म का जवाब सिर्फ एक दिन देती है और वह एक दिन अब दूर नहीं है। मौलाना ने कहा कि सरकार की इन्हीं दोहरी पॉलिसीयों और लगातार क़ौम पर किये जा रहे जुल्म के ख़िलाफ 13 सितम्बर को दरगाह हज़रत अब्बास में अवामी जलसा रखा गया है। ताकि आगे की रणनीति तय की जा सके। मौलाना ने कहा कि हम हमेशा मसअलों को बात चीत के ज़रिये हल करना चाहते हैं। ताकि हमारी कौम को कम से कम नुकसान का सामना करना पड़े, मगर अफ़सोस ये सरकार बात चीत पर तैयार नहीं है। जान बूझ कर हम पर अत्याचार किया जा रहा है। जुमअतुल विदाअ से लेकर 27 जुलाई तक हर जगह हमारे पुर अमन प्रदर्शन पर लाठी चार्ज की गयी। मौलाना ने कहा कि शिया व सुन्नी वक़्फ़ बोर्ड की सी०बी० आई० जाँच होना बहुत ज़रूरी है।

(बाक़ी पेज नं0 46 का...........)

दिशा का बोध कराता है।

करबला के शहीद इमाम हुसैन (अ०) का बलिदान भी ऐसा ही प्रेरक है जो राष्ट्र और जाति की सीमाओं को लांधकर युग-युग तक प्रेरणा देता रहेगा।

चमकता जब तक चन्दा नभ में, और बहता गंगा का पानी है।
युग-युग तक प्रेरित करने को, महान यह कुर्बानी है ।



''इन्सान को बेदार तो हो लेने दो हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन''

''जोश'' मलिहाबादी

मैं अन्त में बड़ी विनय के साथ यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मुझे कोई ऐसी बात कहने में संकोच है जो किसी भाई के लिये कष्टकारी या अप्रिय हो, परन्तु दो बातें जिनका ऐतिहासिक अनुसंधान होके सफ़ाई हो जाये तो निश्चय ही राष्ट्रीय एकता को बहुत बल मिले और वह यह है-

1- क्या **''दत्त ब्राह्मण''** इमाम हुसैन (अ०) के साथ करबला में लड़े थे और काम आए थे और **ब्राह्मणों में ''हुसैनी'' वर्ग कैसे बना जिसके विषय में ''नज्म''** साहिब ने कहा है:-

''कितने ब्राह्मणों को ''हुसैनी'' बना दिया।''

2-क्या हज़रत इमाम हुसैन (अ०) की धर्मपत्नी जनाब शहरबानों के मायके वालों का भारत के किसी राज-परिवार से कोई सिलसिला था और इस विषय में मेरे स्वर्गीय मित्र जनाब जगदीश प्रसाद माथुर (''नसीम'' मुरादाबादी) ने मुझसे बताया था कि महाराज जयपूर के शजरे (वंशावली) में इस तरह का कोई उल्लेख है। यदा-कदा इस तरह की बातें पत्र-पत्रिकाओं में भी छपा करती हैं। आवश्यकता, गम्भीरतापूर्वक इधर ध्यान देने की है। मगर सफ़ाई तो होनी ही चाहिये।